भूमिका

हिंदी साहित्य में मुक्तिबोध प्रयोगवादी दौर के रचनाकार हैं। मुक्तिबोध अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के कारण सर्वाधिक चर्चित रचनाकार रहे हैं। साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों की दृष्टि उनकी रचना में स्पष्ट दिखाई देती है। वे साहित्य को जीवन से अलग नहीं स्वीकारते हैं और न ही जीवनविवेक से। साहित्य उनके लिए दृष्टिकोण भी है, विचार भी है और विवेक भी। प्रगतिशील समाज के लिए ज्ञान और संवेदना का होना आवश्यक है। ज्ञान व्यक्ति को तार्किक और प्रगतिशील बनाता है, वही संवेदना व्यक्ति को समावेशी दृष्टि प्रदान करती है, जिसमें जीवन के अंतर्भूत तत्व का तर्कसंगत विवेचन शामिल होता है। मुक्तिबोध की रचनाओं में इन पक्षों का भी उल्लेख है। कहानी, उपन्यास, डायरी, आलोचना कविता इत्यादि में उनके रचनात्मक व्यक्तित्व का व्यापक फलक दिखाई देता है।

मुक्तिबोध का साहित्यिक परिप्रेक्ष्य विविधताओं से भरा है। साहित्य, इतिहास, समाजशास्त्र मनोविज्ञान एवं राजनीतिशास्त्र इत्यादि विषयों का प्रसंग उनकी कविता, कहानी एवं उपन्यास में स्पष्टता से देखा जा सकता है।

मेरे शोध विषय का अधिकांश परिप्रेक्ष्य साहित्य और इतिहास से जुड़ा हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का शीर्षक है 'गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का इतिहासबोध'। मुक्तिबोध के साहित्य को समझने के लिए यह मेरी कोशिश है। जिसमें मैंने उनकी कविता, कहानी, उपन्यास एवं आलोचना के प्रमुख किताबों का सहयोग लिया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध चार अध्याय में विभक्त है, जिसका प्रतिपाद्य इस प्रकार है:-

प्रथम अध्याय में 'मुक्तिबोधः जीवन परिचय' है। इस अध्याय के अंतर्गत मुक्तिबोध के जीवन के आरंभिक दौर का परिचय दिया गया है। साहित्यकार की

पारिवारिक सामाजिक एवं व्यक्तिगत पृष्ठभूमि को यथासंभंव उल्लेख करने का प्रयास किया गया है। इसी अध्याय में मुक्तिबोध के जीवन के तमाम संघर्ष का उल्लेख उनके लिखे पत्रों के माध्यम से किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'मुक्तिबोध एवं उनका आलोचनात्मक अवदान' है। इस अध्याय के अंतर्गत मुक्तिबोध के आलोचनात्मक अवदान के विषय में लिख गया है। मुक्तिबोध के लिए आलोचना एक प्रकार का साहित्यिक कर्म है। यह योगदान साहित्यिक एवं वैचारिक दोनों दृष्टियों से अभूतपूर्व है। इस अध्याय में लेखक के वैचारिक दृष्टि को उजागर करने का प्रयास किया गया है। आलोचना के क्षेत्र में मुक्तिबोध की वैचारिक दृष्टि तार्किक एवं विज्ञानसम्मत है।

तृतीय अध्याय 'मुक्तिबोध के इतिहासबोध की निर्मित में पूर्व परम्परा का प्रभाव' है। इस अध्याय में मुक्तिबोध के इतिहासबोध का उल्लेख किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत साहित्य एवं इतिहासबोध की निर्मित में पूर्व-परम्परा के प्रमुख आलोचक एवं साहित्येतिहासविद् का परिचय दिया गया है। इतिहासबोध की निर्मिति में पूर्व-परम्परा के स्थापित योगदान को अस्वीकारा नहीं जा सकता है। मुक्तिबोध का इतिहासबोध पूर्व-परम्परा से भिन्न है। आधुनिक समाज की निर्मिति के 'कार्य-कारण' को समझने के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है। इस अध्याय में साहित्य, समाज और इतिहास के बदलते परिप्रेक्ष्य में मुक्तिबोध का इतिहासबोध एवं चिंतन को उजागर किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के विशेष संदर्भ में मुक्तिबोध का इतिहासबोध' है। इस अध्याय में मुक्तिबोध का इतिहासबोध आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के परिप्रेक्ष्य में क्या है? इसका उल्लेख किया गया है। साहित्य प्रत्येक कालखंड में बदलता है, यूँ कहें तो बदलते सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक

परिवेश के कारण साहित्य स्वतः बदलता रहता है। इस अध्याय में साहित्य और इतिहास के बदलते संदर्भ एवं तीनों युगों के वर्गीय चरित्र को भी व्याख्यायित किया गया है।

शोध-प्रबंध की पूर्णता का श्रेय मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. अरविंद सिंह तेजावत को देना चाहूँगी, जिन्होंने शोध-विषय से संबंधित संदेहों को दूर करने में सहयोग प्रदान किया एवं मौलिक शोध लिखने की प्रेरणा दी।

विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. सिद्धार्थशंकर राय एवं डॉ. अमित मनोज का मैं आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने शोध के प्रति सकारात्मक उर्जा प्रदान किया।

मैं अपने परिवारजनों की शुक्रगुजार हूँ जिन्होंने शोध-कार्य के दौरान सर्वव्यापी महामारी कोविड-19 से बचा कर रखा एवं परिवार के समस्त जिम्मेदारियों से मुक्त और स्वतंत्र रखा। इसके अतिरिक्त मैं सभी वरिष्ठ शोधार्थी का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ, जिनका सहयोग रहा।

(ज्योति चन्द्रा)

अनुक्रमांक - 190972

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

जांट-पाली, महेंद्रगढ़-123031 (हरियाणा)